विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

नए न्यूनतम समर्थन मूल्य 2027 तक दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम

केन्द्र सरकार द्वारा आगामी खरीफ के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्यों की घोषणा से यह साफ हो जाता है कि सरकार दलहन और तिलहन के उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में सही व योजनाबद्ध तरीके से कदम बढ़ा रही है। सरकार का लक्ष्य है कि 2027 तक दलहन के क्षेत्र में इस हद तक आत्म निर्भर हो जाए कि विदेशों से एक दाना भी दाल का आयात नहीं करना पड़े। एक मोटे अनुमान के अनुसार दुनिया भर में कुल उत्पादित दालों अर्थात दलहनी फसलों में भारत की भागीदारी 25 प्रतिशत के लगभग है। 2027 तक यह लक्ष्य अर्जित करने के लिए हमें 28 फीसदी का आंकड़ा छूना होगा।

देश के कृषि वैज्ञानिकों और किसानों के संयुक्त प्रयास से देश में कृषि उत्पादन में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। सरकार द्वारा भी इस दिशा में लगातार प्रयास जारी है और जिस तरह के परिणाम सामने आ रहे हैं वे निश्चित रुप से सकारात्मक और उत्साहवर्द्धक है। न्यूनतम समर्थन मूल्यों में लगातार बढ़ोतरी और तिलहनी दलहनी फसलों की खरीद के आश्वासन से किसानों का दलहन-तिलहन के प्रति रुझान बढ़ा है। केन्द्र सरकार ने खरीफ फसल की धान एवं ज्वार की दो किस्मों सहित 16 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा कर एक बार फिर किसानों को बड़ी राहत दी है। केन्द्र सरकार द्वारा घोषित समर्थन मूल्य के अनुसार सर्वाधिक बढ़ोतरी नाइजरसीड यानी कि राम तिल पर की गई है तो दालों में अरहर/तुअर की दाल के एमएसपी में भी 550 रु. की बढ़ोतरी की गई है। वैसे सरकार द्वारा खरीफ की सभी फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य में उल्लेखनीय और किसानों को प्रोत्साहित करने वाली गढ़ोतरी की है।

न्यूनतम समर्थन मूल्यों की घोषणा के पीछे उद्देश्य यह रहा है कि किसानों को कम से कम उनकी लागत का पूरा मूल्य मिल सके। देश में पहली बार 1966-67 में केवल गेहूं की सरकारी खरीद के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा की गई थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने एक अगस्त 1964 को एलके झा की अध्यक्षता में इसके लिए कमेटी घटित की थी। इसके बाद सरकार ने अन्य प्रमुख फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करने की और कदम बढ़ाए। केन्द्र सरकार द्वारा सीएसीपी यानी कि कृषि मूल्य एवं लागत आयोग की सिफारिश पर कृषि जिंसों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा की जाने लगी। आज देश में 23 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा की जाती है। इसमें 7 गेहूं, धान आदि अनाज फसलें, 5 दलहनी फसलें, 7 तिलहनी फसलों 4 नकदी फसलों के समर्थन मूल्य की घोषणा की जाती है। नकदी फसलों में गन्ना के सरकारी खरीद मूल्य की सिफारिश गन्ना आयोग द्वारा की जाती है तो गन्ने की खरीद भी सीधे गन्ना मिलों द्वारा की जाती है। इसी तरह से कपास की खरीद सीसीआई यानी कि कॉटन कारपोरेशन ऑफ इण्डिया द्वारा की जाती है। मुख्यतौर से अनाज की खरीद भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से और दलहन व तिलहन की खरीद नेफैड द्वारा राज्यों की सहकारी संस्थाओं और अन्य खरीद केन्द्रों के माध्यम से की जाती है। केरल सरकार ने 16 तरह की सब्जियों के बेस मूल्य तय कर सब्जी उत्पादक किसानों को बड़ी राहत देने की पहल की है तो हरियाणा सरकार भी केरल की तरह हरियाणा सरकार भी सब्जियों का बेस मूल्य तय करने की दिशा में कदम बढ़ाये है। किसानों के लिए सर्वाधिक चर्चित एमएस स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करने को लेकर भी प्रमुखता से जोर दिया जाता रहा है। एमएस स्वामीनाथन आयोग ने 2004 में अपनी सिफारिश में न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करने का एक फार्मूला सुझाते हुए सुझाव दिया कि उत्पादन लागत से कम से कम 50 प्रतिशत अधिक एमएसपी घोषित की जाए। हांलाकि सरकार का दावा है कि खरीफ 2024 के लिए घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्य 2018-19 की बजट घोषणा के अनुरुप अखिल भारतीय भारित औसत उत्पादन लागत के कम से कम 1.5 गुना के स्तर पर तय किया गया है। सरकारी दावों की बात की जाए तो बाजरा की उत्पादन लागत पर 77 प्रतिशत तो तुअर पर 59 प्रतिशत, मक्का पर 54 प्रतिशत, उड़द पर 52 प्रतिशत तो बाकी अन्य फसलों पर भी उत्पादन लागत पर 50 प्रतिशत मार्जिन होने का अनुमान व्यक्त किया गया है।

न्यूनतम समर्थन मूल्यों में लगातार बढ़ोतरी और तिलहनी दलहनी फसलों की खरीद के आश्वासन से किसानों का दलहन-तिलहन के प्रति रुझान बढ़ा है। केन्द्र सरकार ने खरीफ फसल की धान एवं ज्वार की दो किस्मों सहित 16 फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य की घोषणा कर एक बार फिर किसानों को बड़ी राहत दी है।

दरअसल देश में तिलहन और दलहन उत्पादन के लिए सरकारें गंभीर रही है। 1986 में सेम पित्रोदा की अध्यक्षता में टीएमओ यानी कि तिलहन प्रौद्योगिकी मिशन का गठन किया गया था। इस मिशन के माध्यम से देश में तिलहनों के उत्पादन को बढ़ाना था। राजस्थान सहित देश के प्रमुख उत्पादक राज्यों में तिलहन उत्पादन बढ़ाने के समन्वित प्रयास किये गये। राजस्थान मे तो सहकारी क्षेत्र में तेल मिलें भी लगाई गई और तिलहन सोसायटियां गठित कर उनका संघ भी बनाया गया। तेल मिलों का संचालन भी इसी संघ को दिया गया पर कालांतर में तिलम संघ की तेल मिलें तो बंद हो गई वहीं तिलम संघ अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए आज भी जूझ रहा है।

कमोबेस यही स्थिति अन्य प्रदेशों में भी रही है। खैर यह विषयांतर हो गया पर 1990 में दलहन को भी इस तिलहन प्रौद्योगिकी मिशन के दायरें में लाया गया। इसके बाद 1992-93 और 95-96 में पाम ऑयल और मक्का को भी इस तिलहन प्रौद्योगिकी मिशन के दायरें में लाकर इनके उत्पादन को बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। 2021 से मिशन पॉम ऑयल भी सकारात्मक दिशा में बढ़ता कदम माना जा सकता है। इसके माध्यम से सरकार ने 15 राज्यों में पॉम ऑयल के उत्पादन को बढ़ावा देने के प्रयास किये जा रहे हैं। इस मिशन के तहत 2025-26 में पूर्वोत्तर राज्यों में 3.28 लाख हैक्टेयर में और पूर्वोत्तर के इतर राज्यों में 3.22 लाख हैक्टेयर में पॉम ऑयल की खेती का रकबा पहुंचाने का लक्ष्य रख कर सरकार चल रही है।

खैर दो बातें साफ हो जानी चाहिए कि देश को तिलहन और दलहन की पैदावार में बढ़ोतरी कर आत्म निर्भर बनाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया जाना और समयपूर्व एमएसपी घोषित करना सही दिशा में बढ़ता प्रयास है तो दूसरी और न्यूनतम घोषित दर तो किसानों को मिले ही यह सुनिश्चित करना भी जरुरी है। इसके लिए खरीद व्यवस्था को चाकचोबंद और खरीद तंत्र को मजबूत बनाना होगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

छात्र अपने ज्ञान का उपयोग देश की समृद्धि और संपन्नता के लिए करें : राज्यपाल

जोधपुर, (कासं)। राज्यपाल और कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा है कि विश्वविद्यालय श्रेष्ठ छात्र ही नही अपितु भावी नागरिक भी समाज को दे, जो अपने ज्ञान का उपयोग देश की समृद्धि और संपन्नता के लिए करें। उन्होंने कहा की विद्यार्थी विशाल हृदयी बनें। और संकल्प ले की वे स्वयं अपने लिए ही नहीं प्राणी मात्र के लिए भी कार्य करेंगे। उन्होंने संविधान को सर्वोच्च बताते हुए अधिकारों के साथ कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक रहने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण के इस दौर में विद्यार्थी भविष्य की चुनौतियों को ध्यान में रखकर विज्ञान, अभियान्त्रिकी कला, साहित्य, संस्कृति, मीडिया एवं तकनीकी विषयों में विशेष ज्ञान प्राप्त करें।

- **जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय का 20 वां दीक्षांत समारोह आयोजित**

दीक्षांत समारोह के दौरान राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने सत्र 2022 की 52 हजार डिग्रियों का अनुमोदन किया।

राज्यपाल मिश्र जोधपुर स्थित जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के 20 वें दीक्षांत समारोह में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारे विश्वविद्यालय उत्कृष्ट और सर्वोच्च ज्ञान के केन्द्र बनें। जीवन में असली ज्ञान तत्व, आपकी सतत प्रगति, मेहनत और प्रतिबद्धता में ही निहित है, जो जितना तपेगा उतना ही निखरेगा। साथ ही, उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय शिक्षा के एस कद्र बन, जहां जीवन व्यवहार की शिक्षा मिलें। जिससे जीवन आलोक पथ पर निरंतर अठासर रहे।

मिश्र ने कहा कि विश्वविद्यालय का यह दीक्षांत समारोह महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका आयोजन आज अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर हो रहा है। उन्होंने कहा कि योग भारत की वह महान परम्परा है, जिसने हमारे देश को कभी विश्वगुरू के रूप में पहचान दिलाई थी। आदर्श जीवन शैली के लिए यह आज भी महत्वपूर्ण है क्योंकि योग द्वारा हम स्वस्थ तन और स्वस्थ मन की ओर अठासर होते हैं।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पुस्तकीय ज्ञान के साथ ही विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में व्यावसायिक एवं जीवन कौशल शिक्षा क व्यावहारक पाठ्यक्रमा पर जार दिया गया है। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति केन्द्रित जीवन मूल्यों से जुड़ी यह शिक्षा नीति भारत के सुनहरे भविष्य की राह है, इसलिए सभी विश्वविद्यालय इसे पूरी तरह से लागू करने के साथ इसमें निहित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य करे। उन्होंने कहा कि पाठ्यक्रम ऐसे हो जिसमें भारतीय ज्ञान एवं संस्कृति का समावेश हो, ताकि शिक्षा प्राप्ति के बाद हम मानवता के कल्याण के लिए काम कर सकें।

उन्होंने कहा कि युवा भारत का भविष्य है। उन्हें परम्परागत शिक्षा के साथ-साथ रोजगारपरक शिक्षा मिले। ताकि शिक्षा प्राप्त करने के बाद युवा अधिकाधिक आत्मनिर्भर बन सके। उन्होंने कहा कि जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय का प्रधानमत्रा उच्तर शिक्षा अभियान के अन्तर्गत 100 करोड रूपये की अनुदान राशि केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत की गई है। साथ ही, उन्होंने कहा कि इस राशि का उपयोग गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के तहत शैक्षिक प्रविधियों एवं अन्य सुविधाओं के विकास के लिए शिक्षा के उन्नयन में किया जाए।

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के दौरान राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने सत्र 2022 की 52 हजार डिग्रियों का अनुमोदन किया। मिश्र ने कला, वाणिज्य, विधि, इंजीनियरिंग एवं विज्ञान संकाय के स्नातकोत्तर के 4838 छात्र-छात्राओं, स्नातक में कला संकाय के 35 हजार 240, वाणिज्य के 4594, विधि के 1033, इजाानयारग क 583 आर विज्ञान संकाय के 5544, पीएचडी की 168 उपाधियां और टॉपर 73 छात्र-छात्राओं को स्वर्ण पदक प्रदान किए। इन स्वर्ण पदकों में से 69 विश्वविद्यालय पदक, एक कुलाधिपति पदक एवं तीन डोनर पदक शामिल है। आरंभ में सभी को उन्होंने संविधान की उद्देशिका और मूल कर्तव्यों का वाचन करवाया।

समारोह में मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. एल. श्रीवास्तव विभिन्न संकायों अधिष्ठाता, निदेशक, सिंडीकेट एवं सीनेट के सदस्य, दीक्षांत समारोह के संयोजक, शिक्षक, अधिकारी, उपाधि एवं पदक प्राप्त विद्यार्थी सहित उनके अभिभावक उपस्थित रहे।

प्रेस सेवा पोर्टल की जटिलताओं का दूर करने की मांग

गुवाहाटी। एसोसियेशन ऑफ स्माल एण्ड मीडियम न्यूजपेपर्स ऑफ इण्डिया की राष्ट्रीय परिषद् (नेशनल काउंसिल) की बैठक असम राज्य के गुवाहाटी के पलटन बाजार स्थित होटल स्टार लाइन में आयोजित की गई।

बैठक में छोटे व मझोले वर्ग के अखबारों को प्रभावित करने वाली नीतियों व उनकी समस्याओं का निराकरण करने की मांग की गई। अनेक राज्यों से पधारे प्रकाशकों ने आरोप लगाया कि केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीनस्थ आर. एन. आई. कार्यालय व सी. बी. सी. कार्यालय के अधिकारियों की मनमानी के चलते छोटे व मझोले वर्ग के अखबार मालिक परेशान हैं। इन दिनों नया प्रेस सेवा पोर्टल परेशानी का एक बड़ा कारण बना हुआ है जिसके चलते अखबारों के प्रकाशकों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है और प्रकाशकगण अपने-अपने अखबारों का वार्षिक विवरण नहीं भर पा रहे हैं। अत: प्रेस सेवा पोर्टल की जटिलताओं को दूर करने के साथ-साथ वार्षिक विवरण भरने का समय अगस्त 2024 तक बढ़ाया जाये। वहीं सी. बी. सी. की विज्ञापन पालिसी के चलते छोटे व मझोले अखबारों की विज्ञापन की हिस्सेदारी प्रभावित हो रही है और उनका हक मारा जा रहा है। अत: विज्ञापन नीति में संशोधन किया जाये ताकि छोटे व मझोले अखबारों की विकासदर प्रभावित ना हो। अखबार मालिकों ने यह माँग भी रखी कि अखबारों के मालिकों का परिचय पत्र भी आर. एन. आई. द्वारा जारी किया जाये। मुख्य अतिथि रहे प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (पूर्वोत्तर जोन) के डायरेक्टर जनरल के. सतीश नम्बूदरीपद् ने प्रकाशकगणों की अनेक समस्याओं को सुनकर आश्वासन दिया कि आर. एन. आई. व सी. बी. सी. के उच्चाधिकारियों के साथ बैठक कर छोटे व मझोले अखबारों की जटिल समस्याओं का निस्तारण अवश्य करवायेंगे और जहाँ जिस तरह की जरूरत होगी, उसमें परिवर्तन व संशोधन करवायेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि नई-नई तकनीकों का सामना करने के लिये तैयारी करने की जरूरत है अन्यथा पिछड़ जाओगे। लेकिन मैं अपने स्तर से यही प्रयास करूंगा कि प्रकाशकों की हर समस्या का समाधान हो जाये।

राष्ट्रीय परिषद की बैठक असम राज्य के गुवाहाटी के पलटन बाजार में आयोजित की गई।

- **छोटे व मझोले अखबारों का उत्पीडन बन्द करे केन्द्र सरकार: चंदोला**
- **अखबार प्रकाशन में प्रयुक्त होने वाली सामग्री जी. एस. टी. मुक्त की जाये : श्याम सिंह पंवार**

बैठक में एसोसियेशन की कोषाध्यक्ष भगवती चंदोला, उत्तर प्रदेश राज्य इकाई के अध्यक्ष श्याम सिंह पंवार, अखिलेश सिंह, असम इकाई अध्यक्ष गिरिन्द्र कुमार कार्जी, किरि रांगहेंग, उत्तराखण्ड इकाई अध्यक्ष अतुल दीक्षित, मध्य प्रदेश से अकरम खान, सबरूनिशा, आन्ध्र प्रदेश से एस. कोण्डलाराव, के. वेंकटेश रेड्डी, राजस्थान से गोपाल गुप्ता, तरूण कुमार जैन, धर्मेन्द्र सोनी, अन्जू लता सोनी, कर्नाटक से वेनुगोपाल के. नाइक सहित अनेक प्रकाशक मौजूद रहे।

गोडावण के चूजों को सम से रामदेवरा में स्थित प्रजनन एवं संरक्षण केन्द्र में स्थानान्तरित किया

जालोर, (का.सं.)। प्रदेश में लुप्त हो रहे राज्य पक्षी गोड़ावण को बचाने के लिए भारतीय वन्य जीव संस्थान के केन्द्रीय मंत्रालय के निर्देशन में राज्य सरकार ने प्रयास शुरू किये है। इसके लिए ग्रेट इंडियन बस्टर्ड चूजों को सम से रामदेवरा स्थित प्रजनन एवं संरक्षण केन्द्र में स्थानान्तरित किया गया है। रामदेवरा के केन्द्र में वर्तमान में छह व पहले से तेरह चूजों को रखा गया है। तथा वहां उनको उनके भौतिक वातावरण के अनुसार संरक्षित किया जा रहा है। पूरे भारत में अगस्त 2023 तक 150 ग्रेड इंडियन बस्टर्ड थे। जिसमें से 128 राजस्थान में है। लेकिन अब धीरे धीरे अनदेखी के चलते राज्य पक्षी का अस्तित्व खत्म होता नजर आ रहे है। जिनको बचाने के लिए सरकार प्रयासरत है।

राजस्थान के राज्य पक्षी गोड़ावण को बचाने के लिए जैसलमेर के सम केन्द्र से संरक्षण व प्रजनन केन्द्र रामदेवरा व पोकरण के बीच स्थित गोमट में स्थानान्तरित किया जा रहा है। वर्तमान में सम सेंटर से गोडावण के छह बच्चे जो उम्र में बड़े हैं, उन्हे रामदेवरा सेंटर में स्थानान्तरित किया गया है। उनकी मैटिंग कराने के बाद वे अण्डे देने लगेगे। जिससे लुप्त हो रहे गोडावण की संख्या को बढाया जा सके। इसके बाद उन्हे छोडा जायेगा है। रामदेवरा प्रजनन केन्द्र में वर्तमान में 19 चूजों को रखा गया है तथा उनकी पूरी देखभाल करने के साथ खाने में पेलेट न्यूट्रार्स व कीडे मकोडे दिये जाते है। अभी हाल में छह चूजो को सम सेंटर से रामदेवरा लगाया है। तथा उनको वर्तमान में पूर्ण वातारण के अनुकुल तरीके से संरक्षण व प्रजनन की प्रकिया अपनाई जा रही है। जिससे लुप्त हो रहे राजस्थान के राज्य पक्षी गोडावण के वंश को बचाया जा सके।

- **भारतीय वन्य जीव संस्थान के केन्द्रीय मंत्रालय के निर्देशन में राज्य सरकार ने गोड़ावण संरक्षण के प्रयास शुरू किये**

राजस्थान के पश्चिमी रेगिस्तान शुष्क व अर्ध शुष्क घासभूमियों वाले इलाके में राज्य पक्षी गोडावण पक्षी पाया जाता है। गोडावण को भारतीय तिलोर, जिसे गुरायिन , माल मोरडी, हुकना पक्षी, सोहन चिडिया भी कहते है। जिसका वैज्ञानिक नाम नवीन चर्खिया है। वही उडने वाले पक्षियों में यह सबसे वजनी पक्षी है। भारत में यह पक्षी राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उतर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, ओडिसा व तमिलनाडू राज्य में पाया जाता था। लेकिन अगस्त 2023 सर्वे के अनुसार 150 ग्रेड इंडियन बस्टर्ड में से अब यह पक्षी राजस्थान में 128 व गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक प्रत्येक राज्य में 10 से कम पक्षी है। आईयूसीएन की संकटग्रस्त प्रजातियो पर प्रकाशित होने वाली लाल डाटा पुस्तिका में इसे गंभीर रूप में संकटग्रस्त श्रेणी में तथा भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 की अनुसूची प्रथम में रखा गया है। गोडावण का अस्तित्व वर्तमान में खतरे में है तथा इसकी बहुत ही कम संख्या बची है। धीरे धीरे यह प्रजाति विलुप्ति होने के कगार पर है। गोडावण को बचाने के लिए राष्ट्रीय मरू पार्क में आगामी प्रजनन काल मे सुरक्षा के समुचित प्रबंध किये गये है। गोडावण को बचाने के लिए जैसलमेर के सम में अस्थाई केन्द्र व रामदेवरा में स्थाई केन्द्र खोला गया है। वही केन्द्र सरकार भी गोडावण को बचाने के लिए 8 करोड की लागत से टनल बना रही है। जिससे गोडावण को बचाया जा सके।

संरक्षण एवं प्रजनन केन्द्र रामदेवरा के प्रभारी अधिकारी मोहिबदीन ने बताया कि सम सेटर से वर्तमान में गोडावण के छह चूजो को रामदेवरा लाया गया है। रामदेवरा प्रजनन केन्द्र में उनकी पूर्ण देखभाल की जा रही है। जहां यह चूजे मैटिंग करने के बाद अण्डे देने लगेगे तथा उसके बाद गोडावण के बच्चे निकलने पर उनको संरक्षण कर छोडा जायेगा।

वन अधिकारी जैसलमेर आशीष व्यास ने बताया कि गोडावण को बचाने के लिए दो सेंटर सम व रामदवेरा बनाये गये है। सम सेंटर में गोडावण का चूजा एक माह होने पर संरक्षित करने के लिए रामेदवरा संरक्षण व प्रजनन केन्द्र भेजा जाता है। चूजा के बडा होने के बाद उसे स्थाानान्तरण नही किया जा सकता है। इसलिए गोडावण को बचाने के लिए एक माह चूजा रामदेवरा में स्थानान्तरित किया जा रहा है।

राशिफल

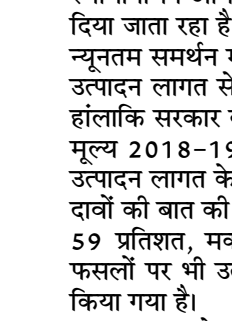

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 22 जून, 2024

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, शनिवार, विक्रम संवत 2081, मूल नक्षत्र सांय 5:54 तक, शुक्ल योग सांय 6:45 तक, बव करण प्रात: 6:38 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज ज्वालामुखी योग प्रात: 6:38 से सांय 5:54 तक है। आज ज्येष्ठी पूर्णिमा, सत्यव्रत, संत कबीर जयन्ती है। आज से राष्ट्रीय आषाढ़ मास आरम्भ होगा। आज प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:20 से 9:03 तक, चर 12:28 से 4:11 तक, लाभ-अमृत 2:11 से 5:37 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:19

मेष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

कन्या
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

धनु
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

मकर
घर-गृहस्थी पर धन खर्च हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक समय खराब होगा।

कुंभ
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। घर-परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से मनोबल बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।